

प्रेस विज्ञप्ति

आज दिनांक 08 मार्च, 2018 को किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के कलॉम सेंटर में “आओ गढ़ें संस्कार वान पीढ़ी” (गर्भोत्सव संस्कार) विषय पर अतिथि व्याख्यान का सफल आयोजन सम्पन्न हुआ। उपरोक्त व्याख्यान डॉ० संगीता सारस्वत, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार द्वारा दिया गया। डॉ० संगीता ने कहा कि वर्तमान में गर्भोत्सव संस्कार की जरूरत इसलिए पड़ी है कि आज का भौतिकवादी विज्ञान हमें ऐसे मोड़ पर ले आया है जहां हम जिस डाल पर बैठे हैं उसी को काट रहे हैं। इंसान की मूलभूत जरूरत भोजन, जल, एवं वायु है किन्तु आज हमने इसे इतना प्रदूषित कर दिया है कि यह हमें ही बीमार बना रही है। तनाव आने वाले समय में पूरे विश्व में महामारी होगा। आज मानव प्रजाति पर न्यूक्लियर युद्ध की तरह ही एंटी माइक्रोबियल रजिस्टेंस का खतरा बढ़ गया है। आज के समय में हम आईक्यू को बहुत महत्व देते हैं किन्तु जब तक इसके साथ विवेक, प्रज्ञा नहीं आए तब तक इसका कोई उपयोग नहीं है। वर्तमान समय में अध्यात्म एवं विज्ञान में तालमेल बैठाना बहुत ही महत्वपूर्ण हो गया है। आने वाला समय अध्यात्मिक विज्ञान का होगा। कई जगहों पर अध्यात्मिक कार्यों में जप किए जाने वाले मंत्रों के ऊपर यह शोध चल रहा है कि वह मनुष्य पर क्या असर डालते हैं। उसी क्रम में गायत्री मंत्र के ऊपर भी एक शोध किया गया है। ऐसे मरीज जिनका ब्लड प्रेसर असमान्य रहता हो उनको लगातार एक महीने तक गायत्री मंत्र का जाप करा कर उनको इसीजी, एवं ब्लड प्रेसर को मानिटर कर के देखा गया तो उनके ब्लड प्रेसर और तनाव कम हो गया था। संस्कार की पद्धति श्री विष्णु द्वारा प्रदान की गई है। यह एक अध्यात्मिक चिकित्सा प्रणाली है जो हमारे विकारों को दूर करती है, इससे मानवीय चेताना उन्नती करती है। माइंड को तीन भाग में बाटते हैं सब कॉन्शियस माइंड, कॉन्शियस माइंड, सुपर कॉन्शियस माइंड। सब कॉन्शियस माइंड का विकास गर्भावस्था से जन्म के पांच वर्ष तक होता है। अध्यात्मिक दृष्टिकोण से मानव शरीर को तीन भागों में बाटा गया है। कारण शरीर, सुक्ष्म शरीर एवं स्थूल शरीर। हम आज स्थूल शरीर के प्रदूषण की तो बात करते हैं किन्तु सुक्ष्म एवं कारण शरीर के प्रदूषण की बात नहीं करते हैं। WHO द्वारा स्वास्थ्य को शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, समाजिक एवं अध्यात्मिक स्वास्थ्य के रूप में परिभाषित किया जाता है। किन्तु आज हम केवल शारीरिक स्वास्थ्य पर ही ध्यान देते हैं। मानव का प्रथम संस्कार गर्भ संस्कार होता है। गर्भोत्सव संस्कार गर्भ विज्ञान का एक अध्यात्मिक समाजिक एवं मानोवैज्ञानिक शिक्षण है। गर्भवती का चरित्र उत्तम, विचार उत्तम होना चाहिए जिससे वो एक उत्तम चरित्र के शिशु को जन्म देती है। ईश्वर ने औरतो को इतनी शक्ति प्रदान की है कि वो जैसा चाहे वैसा महान संतान पैदा कर सकती है। किन्तु आज हम अपनी संतान को डॉक्टर, इंजीनियर बनाना चाहते हैं उसे महान नहीं। माँ की इच्छा शक्ति शिशु के जेनेटिक्स में भी बदलाव ला सकती है। गर्भावस्था के दौरान जैसे गर्भवती के विचार एवं भावनाएं होती हैं उसी प्रकार का हार्मोन उसके शरीर में निकलता जिससे गर्भस्थ शिशु के उपर भी प्रभाव पड़ता है। माँ खुश एवं प्रसन्नचित रहेंगी तो उसके शरीर में अच्छे हार्मोन निकलेंगे और इससे बच्चों का व्यवहार भी अच्छा होगा। गर्भ धारण प्लान करके करना चाहिए। गर्भ धारण करने से पूर्व ध्यान और साधना शुरू करने से प्रेगनेंसी अच्छी होती है। माँ के गर्भ में ही बच्चा स्वाद, महक और आवज आदि को पहचानने लगता है। इसलिए गर्भावस्था के दौरान गर्भवती के आस पास का माहौल सौहार्द पूर्ण एवं स्वस्थ होना चाहिए, लड़ाई झगड़ा नहीं होना चाहिए। गर्भ संस्कार के समय गर्भवती को ॐ का उच्चारण करना चाहिए और अपने बच्चे से स्वस्थ संवाद स्थापित करना चाहिए। गर्भावस्था के दौरान और गर्भावस्था के पश्चात् शब्दों के प्रभाव से हम बच्चों की क्षमता को खत्म कर देते हैं। बहुत से ऐसे माता पिता होते हैं जो अपने बच्चों को यह कहते हैं कि तुम कुछ नहीं कर सकते इस प्रकार वो अपने बच्चे की योग्यता एवं उसकी क्षमताओं को खत्म कर देते हैं। गर्भावस्था के दौरान माता जिस भाषा, विद्या पर ध्यान देती है वो भाषा या विद्या शिशु आसानी से सीख जाता है। इसलिए गर्भावस्था के दौरान गर्भवती को नियमित स्वस्थ जीवनचर्या का पालन करना, योगासन करना, जप, ध्यान, प्राणायाम एवं अच्छी किताबों का अध्ययन

करना चाहिए। अगर आप स्वामी विवेकानंद की तरह पुत्र चाहते हैं तो गर्भावस्था के दौरान उनकी बायोग्राफी को मन से ध्यान लगाकर पढ़ें। हर गर्भवती को चार घण्टे अच्छी बातें सीखनी चाहिए, गूँजने वाले संगीत सुनना चाहिए, गर्भवती के आस-पास प्रसन्न, स्वस्थ एवं सकारात्मक वातावरण बनाना चाहिए, डरावनी तथा नाकारात्मक बातें न करें। गर्भवती को निःस्वार्थ सेवा का भाव रखना चाहिए इससे सकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं।

कार्यक्रम में मा० कुलपति प्रो० मदनलाल ब्रह्म भट्ट जी ने कहा कि यह अतिथि व्याख्यान नर्सिंग के विद्यार्थियों, मेडिकल विद्यार्थियों एवं स्त्री एवं प्रसूती रोग विशेषज्ञों के लिए खास तौर से आयोजित किया गया है। ताकि वो समाज के दूसरे लोगों को इन संस्कारों के विषय में ज्ञान दे सकें। सभी धर्मों में मृत्यु एवं जन्म दो अटल सत्य हैं। मनुष्य जीवन में विभिन्न संस्कारों को अपनाया जाता है। हम शिशु के जन्म से पहले केवल गर्भवती के न्यूट्रिशियन के अलावा अन्य बातों पर ध्यान नहीं देते हैं। गर्भ संस्कार जीवन का सबसे पहला संस्कार होता है और इसका इतना महत्व है कि गर्भवस्था के संस्कार व्यक्ति पर जीवन पर्यंत असर डालता है। गर्भ के दौरान जैसा वातावरण होता है उसी के अनुसार गर्भ में पल रहे शिशु का निर्माण होता है। इसलिए आवश्यक है कि हम गर्भावस्था के दौरान उचित वातावरण का विकास करें।

इस अवसर पर प्रो० विनीता दास, अधिष्ठाता, चिकित्सा संकाय, प्रो० मधुमती गोयल, अधिष्ठाता नर्सिंग संकाय, प्रो० विनोद जैन, अधिष्ठाता, पैरामेडिकल संकाय सहित विभिन्न संकायों के संकाय सदस्य, विद्यार्थी उपस्थित रहे।

प्रेस विज्ञप्ति.2

आज दिनांक 08 मार्च 2018 को चिकित्सा विश्वविद्यालय के 1905 कैंटीन में किचन का उद्घाटन किया गया। उपरोक्त किचन में पुराने किचन के रोटी मेकर मशीन को स्थापित किया गया है जिससे मरीजों, एवं उनके तीमारदारों को उचित दर (20-25 रुपये) पर स्वच्छ एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जा सके और मरीज के तीमारदारों को भोजन के लिए भटकना ना पड़े। उपरोक्त किचन द्वारा चिकित्सा विश्वविद्यालय के रेजिडेंट चिकित्सकों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों, विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों के लिए भी भोजन उपलब्ध कराया जा सकेगा जो की काफी उचित दर पर 20 से 25 रुपये में उपलब्ध कराया जायेगा। उपरोक्त किचन का उद्घाटन मा० कुलपति प्रो० मदनलाल ब्रह्म भट्ट जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर चिकित्सा विश्वविद्यालय के वित्त अधिकारी, मा० जमा, प्रो० विनीता दास, अधिष्ठाता चिकित्सा संकाय, प्रो० कीर्ती श्रीवास्तव, डॉ० परवेज, सहित विभिन्न संकायों के संकाय सदस्य भी उपस्थित रहे।

(प्रो० नरसिंह वर्मा)

संकाय प्रभारी

मीडिया सेल, के०जी०एम०यू०

(प्रो० विभा सिंह)

संकाय प्रभारी

मीडिया सेल, के०जी०एम०यू०

(डॉ० सुधीर सिंह)

सह-संकाय प्रभारी

मीडिया सेल, के०जी०एम०यू०